

Living the

LOTUS

Buddhism in Everyday Life

6
2016

VOL. 129

FOUNDER'S ESSAY

अपनी गलतियों को सुधारने का इच्छुक बनो

यदि आप युवाओं के अकल्पित विचारों को ध्यान से सुने तो पायेंगे कि उनमें बहुत लोग परेशान हैं क्योंकि वे "इच्छुक एवं लचीला होना चाहते हैं परन्तु वैसा बनने में असमर्थ हैं।" वे सदा लचीला बनकर रहना चाहते हैं परन्तु जब समय आता है यह दिखलाने का कि कितने लचीले बन सकते हैं उनकी प्रतिक्रिया विरोध की होती है। बाद में क्रिया पर यह सोचकर अफसोस होता है कि "पुनः उन्होंने वैसा किया।" वे लोग जो इसके लिए ग्लानि से भर जाते हैं उनके लिए मेरा कुछ सुझाव हैं।

इच्छुक बनने एवं लचीला होने के संबन्ध सबसे महत्वपूर्ण तथ्य जिसे जान लेना लाभदायक होगा यह है कि इच्छुक बनने एवं लचीला होने का अर्थ अपनी गलतियों को सुधारने का इच्छुक बनना है। अतः जो आपको सिखलाया जाता है उसे तत्क्षण व्यवहार में लायें। यदि आप का दिमाग संकीर्ण हैं जो आपको विश्वास दिलाता है कि

आप बिल्कुल ठीक हैं, तब आप सुनने को राजी नहीं होंगे जो कुछ दूसरे लोगों का कहना है। आपके इर्दगिर्द के लोग आपको नापसन्द करेंगे क्योंकि आपका निर्णय सदा स्वार्थपरक होता है। वह व्यक्ति जिसने ज्ञान का संचय किया है विवेकशील समझा जाता है। यदि ऐसा है कि ज्ञान से परिपूर्ण व्यक्ति सचमुच में कोमल हृदय का बन जाता है, लोग खासकर वैसे व्यक्तियों को इच्छुक बनने एवं लचीला होने के संदर्भ में लेते और वे लोगों के सम्मान के पात्र होते हैं।

दूसरी ओर वैसे लोग हैं जिनसे लोग घृणा करते हैं यद्यपि कठिन परिश्रम से प्रभूत ज्ञान हासिल किया है। ऐसा इसलिए कि उन्होंने अपने को ज्ञान से सुसज्जित किया है जिससे कि अन्य पर अपना निर्णय लाद सकें। हम उन लोगों को सतही विचारशक्ति का मानते हैं।

काइसोजुकिन 8 (कोसेइ पब्लिसिंग क०), पृ-228-229 के सौजन्य

Living the Lotus
Vol. 129 (June 2016)

Published by Risho Kosei-kai International,
Fumonkan, 2-6-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo, 166-8537 Japan
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: shanzai.rk-international@kosei-
kai.or.jp

Senior Editor: Shoko Mizutani
Copy Editor: Parmita Shekhar
Editorial Staff of RK International

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

□लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ" का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

समन्वय की चाभी

निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट, रिशो कोसेइ काइ



एक दूसरे के साथ आदर एवं विनम्रतापूर्वक व्यवहार करें

बौद्ध धर्मग्रन्थों की शिक्षा में है कि सात नियम हैं जिनके अनुपालन से संघ की तरक्की होगी:

- १) वे सभी प्रायः एक साथ एकत्र होकर धर्मदेशना को सुने और चर्चा करें;
- २) वे बेहिचक मिलेंजुलें और एक दूसरे का आदर करें;
- ३) वे धर्मदेशना का सम्मान करें और नियमों का पालन करें एवं उनमें परिवर्तन नहीं लायें;
- ४) वयोवृद्ध एवं उनसे अल्पायु के सदस्य एक दूसरे के साथ विनम्रता से व्यवहार करें;
- ५) उनका आचरण निष्कपटता एवं आदरभाव से पूर्ण हो;
- ६) वे वैसे शान्त एकान्त स्थान में रहकर अपने मन को शुद्धविशुद्ध करें, जिसे स्वयं लेने के पहले दूसरों को अवसर दें;
- ७) वे सभी से स्नेह करें, आगन्तुक के साथ शिष्टाचारपूर्वक व्यवहार करें तथा रोगग्रस्त को दयाभाव से सान्त्वना दें।

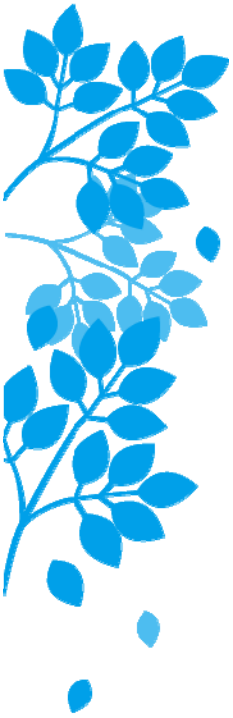
जो संघ इन नियमों का पालन करता है उसकी कभी अवनति नहीं होगी।

(बुद्ध की शिक्षा: बुक्क्योदेन्दोक्योकाइ, २००९ के जापानी अंग्रेजी संस्करण से, पृ०४५४-५६)

बौद्धधर्म में समान श्रद्धाविश्वास रखनेवालों के समुदाय को हम संघ कहते हैं। यह भारतीय शब्द है जिसका अर्थ है बौद्धधर्म में श्रद्धाविश्वास रखनेवालों एवं उनके संगठन, जिसे जापानी में वागोशू (समन्वय में रहनेवालों का संगठन) अर्थात् मित्रगण जिनमें समन्वय है और एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

मित्रगण जिनमें समन्वय है- अगर इस अर्थ को विस्तार दें तो स्थानीय समाज एक संघ है। ऊपर्युक्त सात नियम हमें दिशानिर्देश देते हैं कि कैसे अपने दैनिक जीवन में शान्ति ला सकते हैं। यदि पुनःनियमों को इतना विस्तार दें जिसमें कोई भी समन्वय में आस्था रखनेवाला डिस्पिन आता है उन्हें निर्देश की संज्ञा नहीं दे सकते हैं जो एक परिवार या समाज या देश के सदस्य के रूप में निश्चल शान्तिमय जीवन जीने की शिक्षा देता है ?

उदाहरण स्वरूप, “उन्हें स्वतंत्र रूप से घुलना मिलना और एक दूसरे का आदर सत्कार करना चाहिए,” “वयोवृद्ध एवं उनसे अल्पायु के सदस्य एक दूसरे को आदरपूर्वक व्यवहार करें”को जीवन का मूल



आधार कह सकते हैं। “अपने लिए रखने के पूर्व अन्य को देने का प्रस्ताव,” “आगन्तुक के साथ शिष्टाचारपूर्वक व्यवहार करना” तथा “रोगग्रस्त को दयाभाव से सान्त्वना देना” जैसा व्यवहार दूसरों के प्रति हम करते हैं उनका स्रोत करुणाभाव में है।

इसके अतिरिक्त, समन्वय (वागो) के संबन्ध बौद्ध धर्मग्रन्थों में भी संघ में समन्वय बनाये रखने संबन्धी छः नियमों का विधान है: १) संवेदना भरे शब्दों में बातें करना, २) अनुकम्पामयी कार्यों का सम्पादन करना, ३) अनुकम्पामय हृदय रखना, ४) जो कुछ प्राप्त हो उसमें अन्य को सहभागी बनाना, ५) निष्कलंक शीलों का पालन करना, ६) एक साथ सम्यक दृष्टि रखे।

इनमें भी हमारे लिए कुछ महत्त्वपूर्ण सीखने की चीजें हैं। इसलिए हम सोचें कि किस प्रकार इनको अपने जीवन में लायें और कैसे वे हम में समन्वय ला सकेंगे।

अनुकम्पा हम में समन्वय लाता है

शाक्यमुनि के संबन्ध एक घटना का उल्लेख है। एक शिष्य को विहार में रोग-शैथिल्य पर अकेले पड़ा देखा। कोई सहयोगी उसकी देखभाल के लिए पास नहीं था। शाक्यमुनि ने उससे कहा- मैं तुम्हारा मित्र हूँ और शिष्य के गंदे शरीर को साफ किया, उपचार किया, देह-मालिश किया, साफ धुला चीवर पहनवा दिया और कमरे को भी साफ सुव्यवस्थित कर दिया। इससे शिष्य को शरीर एवं मन में शान्ति और आराम मिला।

शाक्यमुनि के इन कार्यों से हम उपर्युक्त छःनियमों के अनुकम्पामय शब्दों, कार्यों एवं भाव का अनुभव कर सकते हैं। उन्होंने संघ में समानता को दर्शाया है जहाँ चीवर का आदान प्रदान होता है धर्मदेशना का एक साथ मिलकर अनुकरण करते हैं। साथ ही साथ, उनके शिष्य आत्मनिष्ठ जीवन यापन करते थे जैसा कि विपत्ति में भी अपने साथियों की मदद नहीं करते थे। एक व्यक्तिगत परिस्थिति में शाक्यमुनि अकेले ही रोगशैथिल्य के पास गये, पूर्वाग्रह विचलित नहीं हुए और दयाभाव दीखलाया। इसका परिणाम हुआ कि शिष्यों में भी दयाभाव उत्पन्न हुआ। शिष्यों का समूह सञ्चे अर्थों में संघ का रूप ले लिया जिसमें समन्वय आया।

इस उदाहरण पर ध्यान दें तो समझ में आयेगा कि समन्वय के छः नियम जो अनुकम्पामय चित्त में उत्पन्न होते हैं हमारे कायिक वाचिक एवं मानसिक कार्यों में व्यक्त होते हैं। जब अनुकम्पा से ओतप्रोत विचार व्यवहार में आते हैं तो लोगों के दिलों के बीच संबन्ध स्थापित हो जाता है जिससे सौहार्द पैदा होता है जो समन्वय लाता है। वागो (समन्वय) का “वा”का अर्थ भी सौहार्द है। दूसरे शब्दों में प्रत्येक व्यक्ति का दूसरों के प्रति सौहार्द भावना परिवार में समाज में यहाँ तक कि देश और विश्व में समन्वय की ओर ले जाता है। हम सदा सोचते हैं कि देश एवं विश्व संबन्धी समस्यायें सरकार का विषय है परन्तु जैसा कि कन्फ्यूसियस के सूक्तिसंग्रह के एक गाथा में व्यक्त हुआ है-“अपने आप के संबन्ध सोचना एवं अपने घर को सुव्यवस्थित रखना भी शासन प्रणाली है।” समन्वय ऐसा भाव है जो हममें प्रत्येक के मन में निरन्तर पैदा होता है।

ऐसा है तो समन्वय का क्यों इतना महत्त्व है? क्योंकि जैसा हम समझते हैं विश्व में एवं जीवन में सभी वस्तुएँ सुव्यवस्थित समष्टि रूप में विद्यमान हैं। समन्वयभाव से जीने के अतिरिक्त इससे अच्छा कोई दूसरा आदर्श तरीका नहीं है जिससे कि अपने एवं अन्य के जीवन की कद्र कर सकें।

From Kosei, June 2016.



Child Care lifeline

१७ वर्ष का मेरा पुत्र आधी रात में चीखता है

Q प्रश्न: १७ वर्ष का मेरा पुत्र जो उच्चविद्यालय के द्वितीयवर्ष का छात्र है प्रायः आधी रात में चीखता है। हाल ही में मैं एक रात चौंक उठी जब अचानक मैंने अपने पुत्र के चिल्लाने की ऐसी आवाज सुनी- “मैं असफल हूँ। अच्छा है कि मैं मर जाऊँ।” मैं तत्क्षण उठी और उसके पास पहुँचकर उससे पूछा-क्या विद्यालय में उसके साथ कोई घटना हुई है? परन्तु उल्टे वह मुझ पर बरस पड़ा। कुछ नहीं और मुझे अकेला छोड़ दो। आप यहाँ से चली जाओ। मैं और मेरे पति ने उसके बालकाल से ही उस पर उतना ध्यान नहीं दिया है क्योंकि हम दोनों साथ मिलकर एक रेस्तराँ चलाते हैं। क्या यही कारण है मेरे पुत्र की ऐसी प्रतिक्रिया का? या हमारा पुत्र हमारे विरोध में ऐसा कर रहा है क्योंकि जब कभी वह पीता है मेरे और मेरे पति के बीच झगड़ा होता है?



A समाधान: अचानक आधी रात को आपके पुत्र के चिल्लाने को सुनना भयावह है। ऐसा प्रतीत होता है कि आपका पुत्र अकेलापन का शिकार तथा असंतुष्ट है। वह बड़ा हुआ है परन्तु लगता है कि उसने कभी आप माता पिता से शिकायत नहीं की है क्योंकि संभवतः उसने अपनी भावनाओं को भीतर ही दबाये रखा है। आप अपने को धन्य माने कि आपने ऐसे पुत्र का लालन पालन किया है जो अपने माता पिता का ध्यान रखता है।

उच्चविद्यालय के आयु के बच्चों में स्वतंत्र व्यक्तित्व उभर आता है और अपने संबन्ध स्पष्ट परिकल्पना बन जाती है। उनमें एक लक्ष्य की चाह जगती है जिसका वे पीछा करेंगे। जब उन्हें वह प्राप्त नहीं होता है जिसकी कामना है वे हतोत्साहित हो जाते हैं। आपके पुत्र का चिल्लाना भी उसके स्वयं बेहतर बनाने की कामना से निकल रहा है- “मैं ऐसा ही नहीं रहना चाहता हूँ जैसा मैं अभी हूँ। मैं बेहतर बनना चाहता हूँ।” आपके पुत्र ने कहा- “मेरी चाह है कि मैं अभी मर जाऊँ!” परन्तु जब आपने उससे पूछा कि क्या तकलीफ है उसने कहा - कुछ नहीं। इसमें विरोधाभास है, परन्तु इस आयु के बच्चों में स्वभाविक है क्योंकि उनके दिमाग की संरचना में दोहरापन है। यद्यपि आपका पुत्र व्याकुल है वह नहीं चाहता कि उसकी भावना को दूसरे लोग जानें। यह महत्वपूर्ण है कि आप उसके विचारों एवं भावनाओं को भलिभाँति समझें और एक

तुम कितने विवेकशील हो गये हो तुझे मेरा बहुत धन्यवाद है। अगर आप समझती हैं कि पति से झगड़ना गलत था तो सच्चे हृदय से उसे बताएँ। जब परिवार में सदस्यों के बीच समन्वय है तो पुत्र का विचार उसकी भावना स्वतः स्थायित्व प्राप्त करेगा।

घटनायें आपको उत्साहित करने में सहायक बनती हैं कि आप अपने पुत्र के साथ बातचीत का अवसर तलाशती रहें। यदि आप यदाकदा कुछ चीजों के संबन्ध में बातें करती हैं जैसेकि उसके पसन्द का खाना, पसन्द के कपड़े आदि, तो आप उसकी अपेक्षा को समझ सकेंगी। आप उसकी बातों को ध्यान से सुने, नकारना नहीं है। यह कह कर उसे उत्साहित करें कि “मैं जानती हूँ कि तुम कर सकते हो।” यह भी कहें कि “तुम हमारे लिए कितने अहम हो, तुम हमारे निधि हो।” यदि आप ऐसा करती हैं तो आपका



(Tokyo Research Institute for Family Education) के सौजन्य से

टोकियो परिवारशिक्षा शोध संस्थान के सहयोग से

टोकियो परिवारशिक्षा शोध संस्थान यदि माता पिता बदल सकते हैं तो उनके बच्चे भी बदल सकते हैं, उनके सिद्धान्त के आधार के ऊपर व्याख्यान माला जापान के विभिन्न भागों एवं विदेशों में आयोजित करता है जिसमें बच्चों के पालन पोषण के संबन्ध विचार विमर्श किया जाता है। बच्चों से सीखने संबन्धी पारिवारिक शिक्षा के संरक्षण में अनेकानेक खुश परिवार का उदय हुआ है।

कैसे माता पिता तथा बच्चे अपने भाव को पहचानें

सन्तान की चित्कार उसके स्वयं को बेहतर बनाने की कामना से प्रकट होता है; उसका विचार, "मैं उत्तमतर बनना चाहता हूँ," यह उसके बुद्धस्वभाव का प्रकट होना है।

पुण्डरीकसूत्र की धर्मदेशना है कि हम मानव प्राणियों में बुद्धस्वभाव निहित है। प्रत्येक व्यक्ति में असीम उत्तमतर बनाने की अन्तर्निहित शक्ति है।

फिर भी लोगों के लिए अन्तर्निहित बुद्धस्वभाव को मात्र अपनी कोशिश पहचानना अत्यन्त कठिन है। पुण्डरीकसूत्र के अनुसार बुद्धबीज अनुकूल परिस्थितियों एवं कारणों से अंकुरित होता है। इस अवस्था में माता जो अपने सन्तानों के करीब होती हैं वैसे परिस्थितियों एवं वैसे कारणों को रूप दे सकती हैं जो उनको अपने बुद्धस्वभाव को पहचानने में सहायक हो सके।

अपने सन्तानों के प्रति चिन्तित रहने के साथ ही आप अपने बुद्धस्वभाव का भी पोषण करें। आप भी अन्तर्निहित बुद्धस्वभाव की सत्ता के रूप में अद्वितीय अनमोल हैं। आप ने पति के साथ मिलकर पुत्र के शैशवावस्था से ही अथक परिश्रम किया है उसके लिए अपने को धन्य मानें। यदि आप अपने बुद्धस्वभाव को पहचानती हैं तो आप स्वभावतः ही दूसरों में भी निहित बुद्धस्वभाव को देख सकेंगी।

मुझे विश्वास है कि सन्तान की चित्कार आप में उसके दृढ़ विश्वास का प्रतीक है। अपने सन्तान के साथ संवाद द्वारा अपने बुद्धस्वभाव को परिष्कृत करें और दोनों साथ साथ प्रगति की ओर बढ़ते चलें। इस अनुभव से आपको संभावनाओं का कोष मिलेगा।

(धर्म शिक्षा एवं मानव संसाधन विभाग, रिशो कोसेइ काइ के सम्पादकीय प्रबन्धन से जून २०१६ संस्थापक की रचना)



Please give us your comments!



We welcome comments on our e-newsletter Living the Lotus.

Please send us your comments to the following e-mail address.

E-mail: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

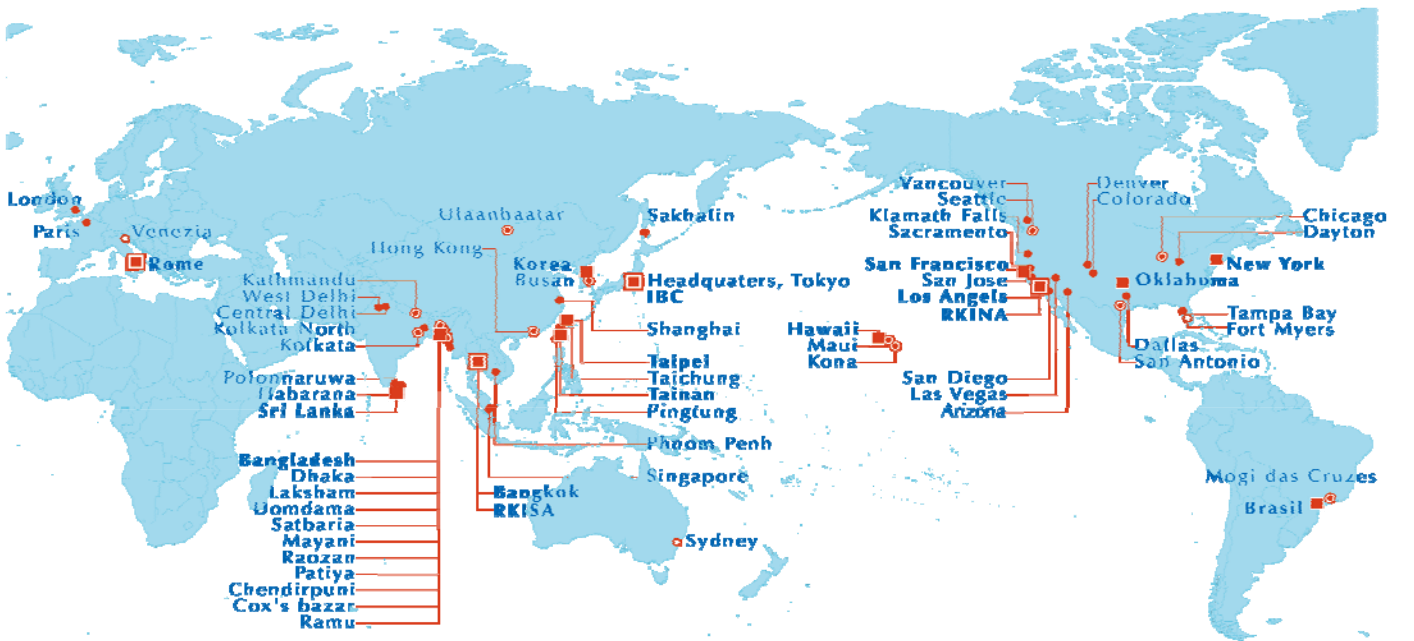
वैसा व्यक्ति बनो जो संसार में सामंजस्य स्थापित करे

जब मैंने प्रेसिडेंट निवानो का इस माह का मार्गदर्शन पढ़ा, मुझे याद है कि मैं कितना अधिक प्रभावित हुआ। उस समय मैं 2016 के विश्व संघ परिषद में था। ऐसा इसलिए है कि प्रेसिडेंट ने धर्म वार्ता में विश्व सामंजस्य की जो व्याख्या की वह हमारा नारे "संग-साथ में आनन्द लें किन्तु स्व-स्थिति बनाये रखे" के अनुरूप है जिसे इस परिषद में हम लोगों ने गहराई से समझा।

मेरे विचार से संसार में तीन प्रकार के लोग हैं- वे जो सामंजस्य बिगाड़ते हैं, जो इसके पक्ष में हैं परन्तु स्वयं इसके लिए कोई नहीं करते हैं और वे जो इसकी स्थापना करते हैं। विश्व संघ के हम लोग तीसरे प्रकार में आते हैं। परन्तु हम स्वयं से गंभीर होकर पूछें कि क्या हम सचमुच में वैसा व्यक्ति बनना चाहते हैं जो सामंजस्य स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील है। यह प्रश्न सामंजस्य स्थापित करने के उद्देश्य को हमारे दिल दिमाग में बिठाये रखने में सहायक बनेगा। यह परम आवश्यक है, इसे ही बोधि-चित्त अर्थात् "बोधिज्ञान प्राप्ति की प्रेरणा" कहते हैं।

जिस संसार में हम रह रहे हैं उसमें सामंजस्य स्थापित नहीं हो सका है और अनेक लोग कठिनाईयों को झेल रहे हैं। हम विश्व संघ के सदस्यगण सामंजस्य स्थापना में अपने को समर्पित करनेवालों के परीधि को बढ़ाने की कामना करते हैं। सर्वप्रथम मैं करुणामैत्री का पालन करूँगा।

रिश्शो कोसेइ काइ अन्तरराष्ट्रीय विभाग निर्देशक
शोको मिजुतानी



RISSHO KOSEI-KAI INTERNATIONAL BRANCHES

Rissho Kosei-kai Overseas Dharma Centers

2016

Rissho Kosei-kai International

5F Fumon Hall, 2-6-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 Fax: 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First Street Suite #1 Los Angeles
CA 90033 U.S.A.
Tel: 1-323-262-4430 Fax: 1-323-262-4437
e-mail: info@rkina.org <http://www.rkina.org>

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay

2470 Nursery Rd. Clearwater, FL 33764, USA
Tel: (727) 560-2927
e-mail: rktampabay@yahoo.com
<http://www.buddhismtampabay.org/>

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218
e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
Tel: 1-808-455-3212 Fax: 1-808-455-4633
e-mail: info@rkhawaii.org <http://www.rkhawaii.org>

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
Tel: 1-808-242-6175 Fax: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, U.S.A.
Tel: 1-808-325-0015 Fax: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
Tel: 1-323-269-4741 Fax: 1-323-269-4567
e-mail: rk-la@sbcglobal.net <http://www.rkina.org/losangeles.html>

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
Tel: 1-210-561-7991 Fax: 1-210-696-7745
e-mail: dharmasanantonio@gmail.com
<http://www.rkina.org/sanantonio.html>

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
Tel: 1-650-359-6951 Fax: 1-650-359-6437
e-mail: info@rksf.org <http://www.rksf.org>

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, U.S.A.
Tel: 1-253-945-0024 Fax: 1-253-945-0261
e-mail: rkseattle@juno.com
<http://www.buddhistLearningCenter.com>

Rissho Kosei-kai of Sacramento

Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016, U.S.A.
Tel: 1-212-867-5677 Fax: 1-212-697-6499
e-mail: rkny39@gmail.com <http://rk-ny.org/>

Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, U.S.A.
Tel: 1-773-842-5654
e-mail: murakami4838@aol.com
<http://home.earthlink.net/~rkchi/>

Rissho Kosei-kai of Fort Myers

<http://www.rkftmyersbuddhism.org/>

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112, U.S.A.
Tel & Fax: 1-405-943-5030
e-mail: rkokdc@gmail.com <http://www.rkok-dharmacenter.org>

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Klamath Falls

1660 Portland St. Klamath Falls, OR 97601, U.S.A.

Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver

1571 Race Street, Denver, Colorado 80206, U.S.A.
Tel: 1-303-810-3638

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

635 Kling Dr, Dayton, OH 45419, U.S.A.
<http://www.rkina-dayton.com/>

Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
CEP 04116-060, Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377
Fax: 55-11-5549-4304
e-mail: risho@terra.com.br <http://www.rkk.org.br>

Rissho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
CEP 08730-000, Brasil
Tel: 55-11-5549-4446/55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei

4F, No. 10 Hengyang Road, Zhongjheng District, Taipei City 100, Taiwan
Tel: 886-2-2381-1632 Fax: 886-2-2331-3433
<http://kosei-kai.blogspot.com/>

Rissho Kosei-kai of Taichung

No. 19, Lane 260, Dongying 15th St., East Dist.,
Taichung City 401, Taiwan
Tel: 886-4-2215-4832/886-4-2215-4937 Fax: 886-4-2215-0647

Rissho Kosei-kai of Tainan

No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan
Tel: 886-6-289-1478 Fax: 886-6-289-1488

Rissho Kosei-kai of Pingtung

Korean Rissho Kosei-kai

6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
Tel: 82-2-796-5571 Fax: 82-2-796-1696
e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan

3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
Tel: 82-51-643-5571 Fax: 82-51-643-5572

Branches under the Headquarters

Rissho Kosei-kai of Hong Kong

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,
North Point, Hong Kong,
Special Administrative Region of the People's Republic of China
Tel & Fax: 852-2-369-1836

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar

15f Express tower, Enkh taiwnii urgun chuluu, 1st khoroo, Chingeltei district, Ulaanbaatar, Mongolia
Tel: 976-70006960
e-mail: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai of Roma

Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax : 39-06-48913949
e-mail: roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK**Rissho Kosei-kai of Venezia**

Castello-2229 30122-Venezia Ve Italy

Rissho Kosei-kai of Paris

86 AV Jean Jaures 93500 Tentin Paris, France

Rissho Kosei-kai of Sydney**International Buddhist Congregation (IBC)**

5F Fumon Hall, 2-6-1 Wada, Sugunami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 Fax: 81-3-5341-1224
e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp <http://www.ibc-rk.org/>

Rissho Kosei-kai of South Asia Division

5F Fumon Hall, 2-6-1 Wada, Sugunami, Tokyo, 166-8537, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 Fax: 81-3-5341-1224

Thai Rissho Friendship Foundation

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkok, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218
e-mail: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka

House No.467, Road No-8 (East), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
Tel: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani

Maitree Sangha, Mayani Bazar, Mayani Barua Para, Mirsarai,
Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya

Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama

Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar

Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria

Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham

Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan

West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni

Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu**Rissho Kosei-kai Dhamma Foundation, Sri Lanka**

382/17, N.A.S. Silva Mawatha, Pepiliyana, Boralesgamuwa, Sri Lanka
Tel & Fax: 94-11-2826367

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa**Rissho Kosei-kai of Habarana**

151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Branches under the South Asia Division**Rissho Kosei-kai of Central Delhi**

224 Site No.1, Shankar Road, New Rajinder Nagar, New Delhi,
110060, India

Rissho Kosei-kai of West Delhi

66D, Sector-6, DDA-Flats, Dwarka
New Delhi 110075, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar,
Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu

Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,
Kathmandu, Nepal

Tel: 977-1-552-9464 Fax: 977-1-553-9832

e-mail: nrkk@wlink.com.np

Rissho Kosei-kai of Singapore**Rissho Kosei-kai of Phnom Penh**

#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Other Groups**Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai**